राखी का महत्व

सभी पाश्चात्य संस्कृतियों में से भारतीय संस्कृति का स्थान सबसे अधिक महात्वपूर्ण व सर्वोत्तम है। इस वसुन्धरा पर भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ पूरे वर्ष के हर दिन कोई न कोई त्यौहार, उत्सव, व्रत, उपवास, जयन्ती आदि होते हैं। हमारे देश की विविध परम्पराएँ, सांस्कृतिक धरोहर व ऐतिहासिक घटनाएँ इन त्यौहारों के माध्यम से मनुष्य के मन को एक नई चेतना देते हैं। उन्हें अपने कर्त्तव्य पालन व मर्यादाओं की स्मृति प्रेरित करती रहती है।

परन्तु आज यह देखा जाता है कि समय की बदलती धाराओं के साथ-साथ हमारे त्यौहारों में उपवास, व्रत आदि नियमों का महत्त्व कम होता जा रहा हैं। इसका कारण यह है कि दिनों-दिन पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। लोगों का आकर्षण धर्म से हट कर दिशाहीन पाश्चात्य संस्कृति की ओर केन्द्रित होता जा रहा है।

ऐसे समय में हमें रक्षा-बंधन के त्यौहार का महत्त्व जानना जरूरी है। क्योंकि रक्षा-बन्धन कोई रस्सी के कच्चे धागों से बन्धने वाला बन्धन नहीं है। यह धागा जीवन की मान-मर्यादा व बहन-भाई के निःस्वार्थ प्यार का प्रतीक है। बहन की सुरक्षा के लिए प्राणों का बलिदान करना पड़े तो भी पीछे नहीं हटने का यह प्रण है। परन्तु आम तौर पर सभी लोग इस त्यौहार को लौकिकता व स्थूल बन्धन के रूप में मनाते हैं। इस राखी में कुछ आध्यात्मिक रहस्य छुपे हुए हैं। इसी दिन हर एक बहन अपने भाई के ललाट पर तिलक लगाती हैं। यह आध्यत्मिकता में आत्म-स्मृति का तिलक है। क्योंकि आत्मा के रहने का स्थान भी तो भृकुटी के बीच में है। आत्मा तो अजर-अमर-अविनाशी है। देह विनाशी है। तिलक लगाते समय बहन-भाई को स्मृति दिलाती है कि हम आत्मा रूप में भाई-भाई हैं और शरीर के सम्बन्ध से बहन-भाई। हमारा पिता अविनाशी है। इसलिए तुम अपने जीवन का दैवी गुणों से श्रृंगार कर सदैव इस संसार में अमर रहो।

दूसरा, तिलक लगाने के बाद बहन, भाई का मुख मीठा कराती है अर्थात कुछ-न-कुछ मिठाई खिलाती है। इसका आध्यात्मिक रहस्य है। तुम्हारे मुख से सदैव मीठे बोल निकले और तुम सदैव दूसरों को मीठे बोल की मिठाई बाँटते रहो।

तीसरा, बहन भाई की कलाई पर राखी बाँधती है। इसका आध्यात्मिक रहस्य है अपनी आत्मा के अन्दर विकार वश जो भी बुराईयाँ हैं उन्हें परमात्मा की याद व शक्तियों द्वारा भस्म, अर्थात उसको राख कर, पवित्र रहने का और दूसरों को पवित्र बनाने का सन्देश देने की प्रतिज्ञा करो।

राखी बाँधते समय हर एक भाई-बहन इन वायदों को दोहरायें। क्यौंकि इस आध्यात्मिक रहस्यों में सत्यता व पवित्रता का बल समाया हुआ है। रक्षा-बन्धन की मार्यादाओं का उल्लेख आपको, इतिहास के पन्ने पलटने से ही मिलेगा। लगभग 400 साल पहले जब मुगल सेना ने चित्तौड़गढ़ पर हमला बोल दिया था तब उस युद्ध में हिन्दुओं का पराजय हुआ जिसमें रानी पद्मिनी सहित हजारों नारियों ने अपनी पवित्रता की सुरक्षा के लिए एक साथ प्राण न्यौछावर किये थे। अपनी पवित्रता की सुरक्षा के लिए रानी कर्णावती, रानी झाँसी, रानी अहिल्या आदि नारियों ने अपने प्राण झौक दिये। महाभारत में द्रौपदी ने अपनी लाज की रक्षा के लिए श्रीकृष्ण को पुकारा।

वर्तमान समय इस कलियुगी आसुरी वृत्ति वाले लोगों ने बहनों की लाज को फिल्मों के पोस्टर द्वारा सड़क पर ला खड़ा किया है। तो क्या नारी भी अपने स्वरूप को भूल गई है? मन्दिरों में पूज्यनीय दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, अम्बा ये नारी का स्वरूप नहीं है? क्या पद्मिनी, रानी झाँसी, मीराबाई ये नारियॉ नहीं थी? फिर स्वरूप ऐसा विकृत क्यों हुआ? बड़ी गहराई से सोचने की बात है। आज एक नहीं हजारों द्रोपदियों के वस्त्र-हरण हो रहे हैं। अनेक बहनें पवित्रता की सुरक्षा के लिए अन्याय भोग रही हैं। अपहरण, बलात्कार, खून, अत्याचार का चारों और डंका बज रहा है। क्या स्वयं को बलवान समझने वाले पुरुषों की आँखों पर अहंकार की पट्टी लगाकर चुप बैठना शोभनीय है? जिन हाथों की कलाई पर बहनों ने सुरक्षा की राखी बाँधी है क्या वे हाथ इतना अत्याचार सहन करने के लिए तैयार हैं? मन में प्रश्न उठता है कि इसके लिए सुरक्षा का क्या उपाय किया जाये? हिंसात्मक मार्ग से जाना उचित नहीं होगा क्योंकि इसके अन्तिम परिणाम विनाश के रूप में होगा। इसमें और रक्तपात और स्वयं को दुःख उठाना पड़ता है। फिर मन में प्रश्न उठता है कि क्या हम बहनों की सुरक्षा में साधन, बाहुबल, सम्पत्ति होते हुए भी समर्थ नहीं हैं?

तो आइए, इस रक्षा-बन्धन के मूल आध्यात्मिक रहस्यों को समझ कर विश्वरक्षक, पतित-पावन ज्ञानसागर व कल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव द्वारा दिये हुए ज्ञान रत्नों को जीवन में धारण कर अहिंसक वृत्ति को अपनायें। परमपिता शिव द्वारा दिया हुआ पवित्रता का मंत्र हरेक मनुष्य को सुरक्षा की गारन्टी देता है। जिससे एक नहीं बल्कि जन्म-जन्मान्तर तक आत्मा सुरक्षा प्राप्त करती है। जब मनुष्य स्वयं को पहचानेगा, अपने विश्व-रक्षक पिता को पहचानेगा, सृष्टि चक्र को पहचानेगा तब उसका जीवन सफल होगा। क्योंकि मनुष्य जीवन का हर क्षण अमूल्य है इसलिए इसे व्यर्थ न गँवायें। आप इस क्षण को अपने ही कमल-हस्तों द्वारा स्वर्ण अक्षरों में लिख सकते हैं। जब आप रक्षा-बन्धन के त्यौहार को आज हर धर्म व सभी जातियों में समान रीति से इसमें छिपी हुई पवित्रता की भावना से प्रेरित होकर सभी की रक्षा करेंगे और दूसरों से भी करायेंगें, तब भारत की धरती पर सुख-शान्ति की हरियाली नज़र आयेगी।

आज राखी के त्यौहार के महत्व को जानकर इन धारणाओं को अपनायें तो हमारी ये भारत भूमि फिर से रामराज्य आर्थात् स्वर्ग बन सकता है। तो आईये हम सब मिल कर आज सच्ची-सच्ची राखी के पावन पर्व के महत्त्व को समझ कर इस त्यौहार को मनायें।

-: ओम् शान्ति :-